इकाई 2 हिंदी की ध्वनियाँ

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 ध्वनियाँ और शब्द

2.3 ध्वनियाँ और उच्चारण की विशेषताएँ

2.4 लहजा या अनुतान

2.5 ध्वनि और लेखन के विविध संबंध

2.6 उच्चारण भिन्नता के कारण वर्तनी की समस्याएँ

2.7 उच्चारण में अंतर, लिपि में अंतर

2.8 ध्वनि और लिपि में असामंजस्य

2.9 सारांश

2.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

2.11 अभ्यासों के उत्तर

2.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप:

- हिंदी की ध्वनियों के बारे में जानकारी प्राप्त कर लेंगे और ध्वनियों में अंतर पहचान सकेंगे;
- ध्वनियों से शब्द बनाने की प्रक्रिया के बारे में बता सकेंगे;
- हिंदी में अन्य भाषाओं से आई हुई ध्वनियों को पहचान सकेंगे और इनके कारण उत्पन्न समस्याओं के बारे में चर्चा कर सकेंगे;
- हिंदी में किसी बात को कहने के ढंग, जिसे लहजा या अनुतान कहते हैं, के आधार पर उसका अर्थ निश्चित कर सकेंगे;
- ध्वनि और लेखन के बीच के संबंध को बता सकेंगे;
- वर्ण के उच्चारण की भिन्नता के कारण उसे लिखने में उत्पन्न कठिनाइयों का निराकरण कर सकेंगे; और
- उच्चारण-भेद के कारण लिपि में हुए अंतर को पहचान सकेंगे।

कुल मिलाकर हम कह सकते हैं कि इस इकाई के अध्ययन के बाद आप हिंदी भाषा का सही उच्चारण कर सकेंगे और सही लेखन के बारे में जान सकेंगे।

2.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई में हमने हिंदी की लिपि का परिचय प्राप्त किया और हिंदी के वर्णों के बारे में और वर्णों से शब्द लिखने की व्यवस्था अर्थात् वर्तनी के बारे में चर्चा की। इस इकाई में हम हिंदी की ध्वनियों के बारे में चर्चा करेंगे।

ध्वनियाँ बोलचाल की भाषा के आधारभूत तत्व हैं। जब हम भाषा बोलते हैं तो वास्तव में क्रमशः विभिन्न ध्वनियों का उच्चारण करते हैं और ध्वनियों से निर्मित शब्द बोलने वाले के विचारों को व्यक्त करते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि अगर ठीक ढंग से ध्वनियों का उच्चारण न किया जाए तो संभवतः बोलने वाला अपना आशय प्रकट नहीं कर पाएगा, सुनने वाला उसका तात्पर्य नहीं समझ पाएगा और इस तरह दोनों के बीच विचारों के आदान-प्रदान में व्यवधान पैदा हो जाएगा। हमने यह भी देखा है कि लिपियाँ वास्तव में उच्चरित ध्वनियों के प्रतिरूप होती हैं। इस कारण यदि सही उच्चारण न किया गया, तो सही लेखन भी नहीं होगा। इस तरह स्पष्ट बोलने और लिखने के लिए सही ध्वनियों के उच्चारण पर बल देना अति आवश्यक है।

हम सामान्यतः भाषा में लगभग 50 ध्वनियों का उच्चारण करते हैं। कुछ भाषाओं में सिर्फ़ 30 ध्वनियाँ होती हैं और कुछ भाषाओं में 65 ध्वनियाँ तक होती हैं। लेकिन अधिकतर भाषाओं के शब्द करीब 50 ध्वनियों से निर्मित होते हैं। हिंदी में भी लगभग 50 ध्वनियाँ हैं। क्या आपने कभी सोचा है कि हम इन 50 ध्वनियों से लाखों शब्दों का निर्माण कैसे करते हैं? और सभी शब्दों के बीच अर्थ में अंतर कैसे होता है? कुछ उच्चरित ध्वनियों से शब्द निर्माण करने और शब्दों में अंतर करने की व्यवस्था मानव की भाषा की सबसे बड़ी विशेषता है। इस इकाई में हम ध्वनियों से शब्द-निर्माण की प्रक्रिया को समझेंगे।

ध्वनि के उच्चारण के अलावा भाषा में एक और महत्वपूर्ण पक्ष है— लहजा या वाक्य बोलने का तरीका। इसी को पारिभाषिक शब्दावली में अनुतान कहते हैं। एक शब्द लीजिए "अच्छा"। इस एक शब्द से हम कभी आश्चर्य प्रकट करते हैं, कभी प्रश्न करते हैं, कभी दूसरे व्यक्ति के कथन के साथ सहमति प्रकट करते हैं या बोलने वाले के कथन के संदर्भ में व्यंग्य करते हैं। एक शब्द के उच्चारण से यह सब कैसे संभव होता है, कभी आपने सोचा है? यह अनुतान या लहजे के कारण संभव होता है। हम एक शब्द या एक वाक्य के उच्चारण में स्वर के उतार-चढ़ाव के कारण भिन्न-भिन्न प्रकार के अर्थ व्यक्त करते हैं। इस इकाई में हम अनुतान के बारे में भी चर्चा करेंगे।

हमने पिछली ईकाई में देखा था कि हिन्दी की लिपि वैज्ञानिक है क्योंकि हिन्दी में प्रायः जैसे उच्चारण करते हैं वैसे ही लिखते हैं। लेकिन इस संदर्भ में भी कुछ अपवाद हैं। हिन्दी में कहीं एक वर्ण दो ध्वनियों का संकेत करता है जैसे "क्ष" में क तथा ष है, या कहीं दो वर्ण एक ध्वनि का प्रतिनिधित्व करते हैं जैसे श और ष का उच्चारण एक ही है। उच्चारण और लेखन में असामंजस्य के इन स्थलों के कारण ही वर्तनी के दोष पैदा होते हैं। हम इस इकाई में ऐसी असामंजस्यपूर्ण स्थितियों के बारे में भी चर्चा करना चाहेंगे, जिससे हिन्दी का प्रयोग करने वाला उच्चारण और लेखन दोनों के बारे में सजग रह सके और सही भाषा का इस्तेमाल कर सके।

2.2 ध्वनियाँ और शब्द

आप जानते हैं कि हिन्दी की वर्णमाला में कुल 47 वर्ण हैं, इस कारण हम कह सकते हैं कि हिन्दी में लगभग 47 ध्वनियाँ हैं। कहा जाता है कि हिन्दी में 3-4 लाख शब्द हैं। क्या आपने कभी सोचा है कि मात्र 40-50 ध्वनियों से 3 या 4 लाख शब्द कैसे बना पाते हैं, इसे जानने के लिए यह आवश्यक होगा कि हम यह देखें कि ध्वनियों से शब्द का निर्माण कैसे होता है। भाषा के शब्द ध्वनियों से निर्मित होते हैं। एक शब्द में एक ध्वनि हो सकती है, जैसे— आ, ए (संबोधन के लिए जैसे ए लड़के), या एक शब्द में कई ध्वनियाँ हो सकती हैं। दो शब्दों में हम अन्तर कैसे करते हैं? जैसे हम "बोलना" शब्द का प्रयोग करते हैं तो दूसरा व्यक्ति उसे "खोलना" या "डोलना" क्यों नहीं समझता? कारण तो स्पष्ट है ही। आप जानते हैं कि ब, ख, ड ये तीन अलग ध्वनियाँ हैं और हम इन तीनों के उच्चारण में अंतर पहचान सकते हैं और इसी कारण हम इन तीनों शब्दों को अलग-अलग पहचानते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि शब्दों के निर्माण में हम इन्हीं ध्वनियों के अंतर का उपयोग करते हैं। किसी शब्द में कम-से-कम एक ध्वनि को बदलकर उस के स्थान पर दूसरी ध्वनि रखते हैं, तो अर्थ में अंतर आ

जाता है और भिन्न शब्द बन जाता है। आगे के शब्द के जोड़ों को देखिए, हर जोड़े के दो शब्दों में एक ध्वनि बदलती है और उस कारण भिन्न शब्द दिखाई पड़ता है। क्या आप बता सकते हैं कि दोनों शब्दों में अर्थ-भेद पैदा करने वाली ध्वनि कौन-सी है?

कमल	जाग	लदान
कमर	झाग	लगान
कूल	खोलना	जाति
कुल	खौलना	जाती

आपने खुद अनुभव किया होगा कि इन शब्द-युग्मों में (दो-दो शब्दों में) एक ध्वनि के बदलने के कारण शब्द का रूप बदल जाता है और उसका अर्थ बदल जाता है। हम कह सकते हैं कि **शब्द** भाषा के अर्थ को वहन करने वाला खंड है और इन खंडों का निर्माण एक या अधिक ध्वनियों से होता है। इस कारण हर दो शब्दों के बीच में कम-से-कम एक ध्वनि में परिवर्तन होना चाहिए, तभी हम दोनों शब्दों को अलग कर सकेंगे। ध्वनियों की शब्द-रचना में इस विशेषता को अर्थभेदकता कहते हैं, यानि अर्थ में भेद या अतंर करने का गुण। यहाँ हम ऐसे शब्दों की चर्चा नहीं करेंगे जिनके दो या तीन अर्थ होते हैं, जैसे — मगर एक प्राणी है, और "मगर" का दूसरा अर्थ है "लेकिन"। ऐसे शब्दों को बहुअर्थी या कई अर्थों वाला **शब्द** कहते हैं। यहाँ "मगर" के दोनों उच्चारणों में कोई अंतर नहीं है, बल्कि एक ही शब्द दो अलग अर्थ देता है। हम ऐसे शब्दों की चर्चा और उनके उपयोग का अभ्यास बाद में करेंगे।

2.3 ध्वनियाँ और उच्चारण की विशेषताएँ

हमने ऊपर देखा कि ध्वनियाँ शब्द में अर्थ-भेद पैदा करती हैं। लेकिन इसके लिए आवश्यक है कि हम दो ध्वनियों में उच्चारण के स्तर पर भी अंतर करें और सुनने वाला दो ध्वनियों के उच्चारण में अंतर को पहचाने। अगर "क" और "ख" दोनों का उच्चारण एक जैसा हो और सुनने वाला उन्हें एक ही तरह से सुनता हो, तो हम "काना" और "खाना", "कोना" और "खोना", "सका" और "सखा" आदि शब्दों में अंतर नहीं कर पाएँगे। फिर यह सवाल उठता है कि हम "क" और "ख" में उच्चारण में क्या अंतर करते हैं, हम उच्चारण के इस अंतर को कैसे पहचानते हैं, इस चर्चा से हम हिंदी की वर्णमाला पर फिर से प्रकाश डालना चाहेंगे। आगे हिंदी की वर्णमाला को हमने उच्चारण की विशेषताओं के हिसाब से प्रस्तुत किया है, उसका अध्ययन कीजिए।

हिंदी की ध्वनियों का उच्चारण

स्वर	जिह्वा के अगले भाग से ←		→ जिह्वा के पिछले भाग से	
मुँह कम खुला	ई	इ	उ	ऊ
↑		ए	ओ	
↓		ऐ	अ	औ
मुँह अधिक खुला				(ऑ)
				आ

यहाँ हमने यह ऋ को नहीं दिखाया है, क्योंकि यह पूर्ण रूप से स्वर नहीं है। यह "रि" के समान उच्चरित होता है।

व्यंजन

अघोष	अघोष	घोष	घोष	नासिक्य
अल्पप्राण	महाप्राण	अल्पप्राण	महाप्राण	

स्पर्श

कंठ्य	क	ख	ग	घ	ङ
तालव्य	च	छ	ज	झ	ञ
मूर्धन्य	ट	ठ	ड	ढ	ण
दंत्य	त	थ	द	ध	न
ओष्ठ्य	प	फ	ब	भ	म

व्याकरण के

अनुसार अंतस्थ य र ल व

प्रयत्न के आधार पर वर्गीकरण—

अर्ध स्वर य, व

लुंठित र

पार्श्विक ल

उत्क्षिप्त ड़ (अल्पप्राण) ढ़ (महाप्राण)

व्याकरणिक शब्द-ऊष्म

प्रयत्न के आधार पर-संघर्षी श ष स ह

अन्य संघर्षी ख़ ग़ ज़ फ़

नोट : हम जब "क" की बात करते हैं, तो वह वर्ण भी है और ध्वनि भी। दोनों में अंतर करने के लिए आगे से हम ध्वनियों को//के द्वारा दिखाएँगे। वर्ण या वर्तनी को " " से। जैसेः

ध्वनि— /क/ /च/ उच्चरित शब्द /जाना/

वर्ण— "क" "च" वर्तनी "कमल" "जाना"

इस वर्णमाला में हमने अरबी-फ़ारसी और अंग्रेज़ी से आये हुए कुछ उच्चारणों को भी दिखाया है। इन वर्णों को हमने ऊपर कोष्ठक में दिखाया है।

आपने देखा कि कवर्ग में 4 वर्ण हैं क, ख, ग, घ। इन चारों में अंतर का आधार क्या है? हमने लिखा है कि /क/ अघोष है, अल्पप्राण है। /ग/ घोष, अल्पप्राण है। अर्थात् इन दोनों में प्राणत्व नहीं है। प्राणत्व की हम आगे चर्चा करेंगे। इन दोनों में अंतर का कारण है घोषत्व। घोषत्व क्या है, इसे हम कैसे पहचान सकते हैं? इन दोनों का उच्चारण करते समय गले में हाथ रखिए, /क/ बोलते समय गले में किसी प्रकार की हरकत नहीं होगी, /ग/ बोलते समय आप अनुभव करेंगे कि गले में कुछ कंपन हो रहा है। यही कंपन घोषत्व है और हम घोषत्व के आधार पर /क/ और /ग/ और इसी तरह /प/ /ब/, /त/ /द/ आदि में अंतर करते हैं। हम इस अंतर को सुनते समय पहचान पाते हैं/ इसी कारण हम/काना/,/गाना/, /ताना/, /दाना/ आदि के शब्दों के अर्थ में अंतर करते हैं। अब हम प्राणत्व की चर्चा करेंगे। प्राणत्व का अभिप्राय है, मुँह से निकलने वाली हवा । यह कम या अधिक होती है, जिससे अल्प प्राण और महाप्राण के रूप में ध्वनियों के दो भेद हो जाते हैं। आपने देखा कि /ख/ और /घ/ महाप्राण ध्वनियाँ हैं। ये दोनों क्रमशः अघोष और घोष ध्वनियाँ हैं, जिस गुण की हम ऊपर चर्चा कर चुके हैं। प्राणत्व क्या है? अगर आप प्राणत्व को अपनी आँखों से देखना चाहें तो एक मोमबत्ती जला दीजिए। मुँह मोमबत्ती के पास ले जाकर पहले /ग/ बोलिए बाद में /घ/। आप देखेंगे कि /घ/ का उच्चारण करते समय मोमबत्ती बुझ जाती है या उसकी लौ हिलने लगती है। इसका कारण? मुँह से निकलने वाली हवा ही इसका कारण है। जब हम /ग/

बोलते हैं तो ज्यादा ज़ोर से हवा नहीं निकलती। /ख/ या /घ/ बोलते हैं तो हवा का एक झोंका निकलता है, जिसके कारण मोमबत्ती बुझ जाती है या उसकी लौ हिलने लगती है। इसी विशेषता को हम प्राणत्व कहते हैं।

कवर्ग से लेकर पवर्ग के सारे व्यंजन स्पर्श कहलाते हैं। इसका एक उप-वर्ग भी है, जिसे हम नासिक्य व्यंजन कहते हैं। अर्थात् नाक से बोले जाने वाले व्यजंन। जब हम /प/या/ब/ का उच्चारण करते हैं, तो हवा नाक से नहीं निकलती। लेकिन जब /म/ बोलते हैं तो हवा मुँह और नाक दोनों विवरों से निकलती है। नासिक्य व्यंजन भी स्पर्श हैं, अर्थात् पवर्ग के सारे व्यजंन एक ही जगह से बोले जाते हैं। आप खुद देख सकते हैं कि /प/ब/ अथवा /म/ बोलते समय हम पहले दोनो होंठ बंद करते हैं और जब मुँह खुलता है, तब ध्वनि का उच्चारण होता है। इसलिए पवर्ग को ओष्ठ्य व्यंजन कहा जाता है। इसी तरह से तवर्ग को दंत्य व्यंजन कहते हैं, क्योंकि दाँत से जीभ लगती है और हवा बंद हो जाती है। इसी तरह से पाँचों वर्गो के उच्चारण के स्थान के आधार पर इनका अलग-अलग नाम है। इसके बारे में अगर आप ज्यादा जानना चाहें तो भाषा विज्ञान की कोई पुस्तक पढ़ें।

स्पर्श व्यंजन में जीभ के ऊपर तालु से स्पर्श के कारण हवा का रास्ता बंद हो जाता है, इसलिए इन्हें हम स्पर्श व्यंजन कहते हैं। आप स्पर्श व्यंजन ज्यादा देर तक नहीं बोल सकते। या तो मुँह बंद रखेंगे और उच्चारण नहीं होगा या मुँह खोलेंगे तो उच्चारण खत्म हो जाएगा। स्पर्श की तुलना में कुछ ध्वनियाँ ऐसी हैं, जिनका उच्चारण आप बहुत देर तक कर सकते हैं। जैसे आप साँप की तरह स् स् स् स् करने की कोशिश कीजिए। जब तक साँस है, आप उच्चारण कर सकते हैं। ऐसी ध्वनियों के उच्चारण में हवा का मार्ग बहुत छोटा होता है। इसलिए हवा संघर्ष करते हुए जाती है। इसीलिए इन ध्वनियों को संघर्षी व्यंजन कहा जाता है। इन ध्वनियों को व्याकरण में ऊष्म ध्वनियाँ कहा गया है। हिंदी में ऊष्म ध्वनियाँ हैंः स, श, ष, ह। स्पर्श, नासिक्य या संघर्षी व्यंजन उच्चारण के विभिन्न प्रयत्नों या तरीकों से अलग किये जाते हैं। हमने ऊपर ध्वनियों की तालिका में अर्ध स्वर, लुंठित, उत्क्षिप्त आदि अन्य प्रयत्नों के नाम गिनाये हैं। इनके बारे में आप ज्यादा जानकारी के लिए चाहें तो भाषा विज्ञान से संबंधित कोई ग्रंथ देखें।

व्यंजनों की तुलना में ध्वनियों का एक दूसरा महत्वपूर्ण प्रकार है स्वर। स्वर वे ध्वनियाँ हैं जिनके बोलने में मुँह ज्यादा खुलता है। आप /आ/ बोलकर देखिए। स्वरों में भी हम बोलने के तरीके से उच्चारण में अंतर करते हैं। /आ/ के उच्चारण में मुँह ज्यादा खुलता है, /ऊ/ के उच्चारण में मुँह कम खुलता है। इसी तरह से /ऊ/ स्वर का उच्चारण हम मुँह में आगे से करते हैं, /ई/ स्वर का उंच्चारण हम मुँह में पीछे से करते हैं। उच्चारण की इस प्रक्रिया से ही हम विभिन्न स्वरों में अंतर करते हैं और इन स्वरों से विभिन्न शब्दों का निर्माण करते हैं। हम यहाँ स्वर संबंधी एक प्रमुख बात की चर्चा करेंगे जिसे स्वर की मात्रा कहा जाता है। /इ/ और /ई/, /उ/ और /ऊ/, /अ/ और /आ/ क्रमशः ह्रस्व और दीर्घ स्वर कहलाते हैं। ह्रस्व स्वर हम कम समय में बोलते हैं दीर्घ स्वर बोलने में ज्यादा समय लगता है।

आप यह जानना चाहेंगे कि हमने जिन विदेशी ध्वनियों का जिक्र किया है उनकी क्या स्थिति है, उनका उच्चारण कैसे किया जाए। /क़/ स्पर्श ध्वनि है, हिंदी /क/ से भी पीछे के स्थान बोली जाती है। /ख़, ग़, ज़, फ़/ चारों संघर्षी व्यंजन हैं। इनमें दो संघर्षी व्यंजन /ज़/, फ़/ अंग्रेजी भाषा से भी लिये गये हैं। अंग्रेज़ी से आये हुए एक विशिष्ट स्वर /ऑ/ को निम्नलिखित शब्दों में लिपि-संकेत के साथ देख सकते हैं। जैसेः डॉक्टर, कॉलेज, लॉ।

2.4 लहजा या अनुतान

ऊपर हमने अनुतानों की चर्चा मात्र की है। यहाँ हम उसका कुछ विस्तृत परिचय कराना चाहेंगे। अनुतान से हमारा तात्पर्य वाक्य बोलने के ढंग से है। आम तौर पर लिखित भाषा में अनुतान को हम विराम चिह्नों से देखते हैं, जैसे, प्रश्न चिह्न प्रश्नवाचक वाक्यों के अंत में आता है। जिस वाक्य से हम आश्चर्य या विस्मय प्रकट करते हैं, उसके अंत में विस्मयादि

बोधक चिह्न लगता है। सामान्य रूप से सूचनाएँ देने के लिए हम **निश्चयार्थक** वाक्य बोलते हैं, जिनके आगे पूर्ण विराम का चिह्न (यानि खड़ी पाई) लगता है। एक ही वाक्य में ये तीनों चिह्न इस प्रकार तीन अनुतानों का बोध कराते हैं, जैसे :

यह बहुत अच्छी तस्वीर है?
यह बहुत अच्छी तस्वीर है!
यह बहुत अच्छी तस्वीर है।

अनुतान अपने में विस्तृत विषय है। इसके बहुत से भेद हैं। जैसे विस्मयादि बोधक चिह्न से ही हम आश्चर्य, प्रशंसा, व्यंग्य आदि अर्थ प्रकट कर सकते हैं। इस कारण अनुतान के संदर्भ में हम यहाँ ज़्यादा चर्चा नहीं करेंगे। हम आपको अनुतान के बारे में एक वीडियो पाठ देंगे, जिसमें आप विभिन्न अनुतानों के बारे में ज़्यादा जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

अभ्यास

1) नीचे लिखे वाक्यों में से कुछ सही हैं और कुछ गलत। उचित उत्तर पर (√) चिह्न लगाए।

   1) जिन ध्वनियों के उच्चारण में गले में कंपन उत्पन्न हो उन्हें अघोष ध्वनियाँ कहते हैं ( ) सही ( ) गलत

   2) जिन ध्वनियों के उच्चारण में हवा संर्घष करते हुए निकलती है उन्हें ऊष्म ध्वनियाँ कहते हैं ( ) सही ( ) गलत

   3) तवर्ग के व्यंजनों को दंत्य व्यंजन कहा जाता है। ( ) सही ( ) गलत

   4) जिन ध्वनियों के उच्चारण में हवा सिर्फ़ मुँह से बाहर निकले उन्हें नासिक्य ध्वनियाँ कहते हैं। ( ) सही ( ) गलत

   5) ह्रस्व स्वर के उच्चारण में अधिक समय लगता है। ( ) सही ( ) गलत

2) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

   1) .....बोलचाल की भाषा के आधारभूत तत्व हैं।

   2) वाक्य बोलने के ढ़ग को पारिभाषिक शब्दावली में.....या.....कहते हैं।

   3) किसी शब्द में एक ध्वनि बदल लेने से उसके.....में.....आ जाता है।

   4) दो शब्दों के बीच ध्वनि से अर्थ बदलने की विशेषता को.....कहते हैं।

   5) एक शब्द में एक.....हो सकती है या एक शब्द में अनेक.....हो सकती हैं।

3) नीचे लिखे शब्दों में कुछ ध्वनियों के बदल जाने के कारण अर्थ-भेद है। बताइए इनमें कौन-कौन सी ध्वनियाँ भिन्न हैं? भिन्न ध्वनियों को अलग करके लिखिए।

   1) काल/खाल
   2) दिन/दीन
   3) खेल/खोल
   4) मूँछ/पूँछ
   5) चटपट/खटपट
   6) काका/खाका
   7) बच्चा/कच्छा
   8) खाना/खोना

9) कला/काला
10) घट/घटा
11) लाभ/लोभी
12) ग्रह/गृह
13) आम/अमा
14) निर्माण/निर्वाण

2.5 ध्वनि और लेखन के विविध संबंध

भाषा का उच्चरित रूप भाषा का वास्तविक रूप है, लेखन इसका प्रतिरूप है। लिखित भाषा उच्चरित भाषा के सभी तत्वों को नहीं दिखा पाती। लेकिन लिपि के माध्यम से भाषा के उच्चारण तत्वों को समझना आवश्यक हो जाता है, जिससे हम भाषा का सही उच्चारण कर सकें। लिपि की सहायता से हम ऐसे स्थलों को निर्दिष्ट कर सकते हैं।

हिन्दी में "ऐ" और "औ" मूल स्वर हैं। लेकिन, गुजराती, मराठी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम आदि भाषाओं में हम इसका भिन्न उच्चारण देखते हैं। वहाँ उच्चारण क्रमशः अइ (या अय्) और अउ (या अव्) के समान होता है। हिंदी लिपि में दिखाया जाए, तो तमिल भाषी "औरत" को /अउरत/ और "पैसा" को /पइसा/ बोलता है। हिंदी में भी यह उच्चारण है,

लेकिन सीमित संदर्भों में।

उदाहरण देखिए :

वर्ण "ऐ", उच्चारण /अइ/ - मैया, सैयद, तैयार, रैयत, ऐयाशी, मैयत

वर्ण "औ" उच्चारण /अउ/ - कौवा, यौवन, चौवन, मनौवल

क्या आप पहचान पाये हैं कि यह विशिष्ट उच्चारण क्यों और कहाँ होता है? "य" से पहले "ऐ" तथा "व" से पहले "औ" का उच्चारण बदल जाता है। लिपि /ऐ/ तथा /अइ/ स्वर के दोनों उच्चारणों में अंतर नहीं दिखाती। लकिन हम ऊपर बताये नियम से उच्चारण के अंतर को समझ सकते हैं।

इसी तरह अ का उच्चारण निम्नलिखित शब्दों में कुछ ऊपर का उच्चारण हो जाता है,

कुछ-कुछ ह्रस्व /ए/ के समान। आप गौर करेंगे तो खुद नियम जान सकेंगे।

कहना	पहला	रहमान	अहमद	पहचान	शहरी	पहलू
शहर	नहर	ठहरो	ठहरना	लहर	चहकना	चहल-पहल

आपने नियम जान लिया? हाँ, तो आप बहुत सतर्क व्यक्ति हैं। "ह" से पहले /अ/ का उच्चारण कुछ अलग हो जाता है। आप आगे से रेडियो सुनें या टी.वी. देखें तो ऐसे शब्दों की विस्तृत सूची बनाइए। आप यह भी जानने की कोशिश कीजिए कि निम्नलिखित शब्दों में शुरू में कौन-सा उच्चारण है :

महा	कहावत	सहारा	नहाना	पहाड़	कहानी
महिमा	अहीर	सहूलियत	सहोदर	बहू	बहुत

फिर इन शब्दों के उच्चारण के लिए अपना नियम दीजिए।

2.6 उच्चारण भिन्नता के कारण वर्तनी की समस्याएँ

क्या हम उच्चारण की इस विशेषता को वर्तनी में भी देखते हैं? हाँ। "तैयार" को कुछ लोग (तय्यार) लिखते हैं, कुछ तैय्यार। "अय्याशी" और "ऐयाशी" दोनों रूप प्रचलित हैं। आप हमेशा "तैयार","ऐयाशी", लिखें तो आपको कोई कठिनाई नहीं होगी।

"कहना" जैसे शब्दों के संदर्भ में हमें वर्तनी के विविध रूप मिलते हैं। जैसे सिर्फ "अ"— कहना, लहर, शहर, रहन-सहन, पहलू, ठहरना, लहँगा।

सिर्फ "ए"— मेहमान, रेहन, सेहत, चेहरा, बेहतर, तेहरान

"अ" या "ए" — अहसान/एहसान, रहन/रेहन, ज़हन/ज़ेहन

इनके अलावा "बहन", "पहला", "पहचान" आदि मानक शब्दों के लिए हिंदी के कुछ क्षेत्रों में "बहिन","पहिला", "पहिचान" आदि रूप भी मिलते हैं।

ध्वनि और लिपि के इस सूक्ष्म संबंध को जानना भाषा के सही प्रयोग के लिए आवश्यक है।

2.7 उच्चारण में अंतर, लिपि में अंतर

हम यह कहते आये हैं कि लिपि उच्चारण की विशेषताओं को प्रकट करती है। शब्दों का उच्चारण सब जगह एक जैसा नहीं होता। शब्द-निर्माण की प्रक्रिया में कभी-कभी आस-पास की ध्वनियों के कारण उच्चारण बदल जाता है और लिपि इन्हें प्रस्तुत करती है। हम आगे हिन्दी के दो उपसर्गों से बने कुछ शब्दों को देखेंगे, जिनमें उच्चारण-परिवर्तन को आप देख सकते हैं और साथ-साथ लिपि के माध्यम से इन्हें प्रकट करने के तरीक़े को भी देख सकते हैं।

उपसर्ग उत् (ऊपर)	**उपसर्ग सत् (अच्छा)**
उत् + पात — उत्पात	सत् + पुरुष — सत्पुरुष
उत् + माद — उन्माद	सत् + मार्ग — सन्मार्ग
उत् + भव — उद्भव	सत् + भाव — सद्भाव
उत् + चरण — उच्चारण	सत् + चरित्र — सच्चरित्र
उत् + नत — उन्नत	

शब्द-रचना की इस विशेषता को संधि का नाम दिया जाता है। भाषा विज्ञान में इसे समीकरण कहते हैं, अर्थात् कुछ दृष्टियों से दोनों ध्वनियों का समान हो जाना। ऐसे स्थलों को पहचानने से हम शब्द रचना से परिचित हो सकेंगे और शब्द के सही अर्थ को पहचान सकेंगे। रचना के नियम जानने पर हमें वर्तनी और उच्चारण का भी सही ज्ञान होगा।

2.8 ध्वनि और लिपि में असामंजस्य

हमने ऊपर कहा था कि हिन्दी को वैज्ञानिक भाषा माना जाता है क्योंकि उसमें प्रायः जैसे बोला जाता है वैसे ही लिखा भी जाता है। हमने "प्रायः" कहा है। इसका मतलब यह है कि इस नियम के कुछ अपवाद भी हैं। इन अपवादों के कई कारण हैं, जैसे संस्कृत भाषा से/ष/ ध्वनि हिन्दी में आई थी, लेकिन उच्चारण-परिवर्तन के कारण यह ध्वनि अब समाप्त-सी हो गई है। इसलिए आज हम हिन्दी में "श", "ष" दोनों का एक जैसा उच्चारण करते हैं। आप चाहें तो इनके उच्चारण में अब भी भेद कर सकते हैं। "श" तालव्य है, जिसे बोलने में जीभ तालु से लगती है और "ष" मूर्धन्य ध्वनि है जिसे बोलने में जीभ तालु से पीछे मूर्धा से लगती है। उच्चारण में अंतर न कर सकने के कारण ज्यादातर सीखने वाले छात्र इन दोनों वर्णों के सही प्रयोग को समझ नहीं सकते और इस कारण गलतियाँ करते हैं। इस तरह संस्कृत से आये दो और वर्ण हैं- "ऋ", "ज्ञ", जिनके मूल उच्चारण को हम आज नहीं जानते। हम क्रमशः इन्हें /रि/, /ग्य/ के रूप में उच्चरित करते हैं। इसीलिए बहुत से छात्र विज्ञान को "विग्यान" लिखते हैं। इसी तरह संस्कृत से आया हुआ एक और वर्ण है "क्ष" जिसके उच्चारण की एक विशेषता है। यह एक वर्ण है, लेकिन उच्चारण के स्तर पर दो

ध्वनियाँ हैं — /क/ + /ष/। हमें ऐसे स्थानों पर ध्यान देना चाहिए, जहाँ उच्चारण और लेखन में सामंजस्य नहीं है और इन स्थलों के कारण होने वाले वर्तनी-दोषों को दूर करने के लिए विशेष सावधानी वरतने की आवश्यकता है।

उच्चारण के संदर्भ में एक और कठिनाई है। हिंदी भाषी क्षेत्र बहुत बड़ा है। इसलिए क्षेत्र विशेष के अनुसार भी उच्चारण के विविध रूप दिखाई पड़ते हैं, जैसे कुछ जगहों में लोग "श" "ष" को /स/ बोलते हैं और कुछ जगहों में लोग /व/ के स्थान पर /ब/ बोलते हैं। उच्चारण की इस क्षेत्रीय विशेषता के कारण उनकी भाषा में अर्थ भेदकता हो जाती है। ऐसे लोग /साम/, /शाम/ या /साल, /शाल/ में अंतर नहीं करते। ऐसी क्षेत्रीय भिन्नताओं के कारण भी छात्रों में वर्तनी-दोष दिखाई पड़ते हैं। जिस तरह से हिंदी की लिपि के मानक स्वरूप की कल्पना की गयी और उसे मानक रूप देने का यत्न किया गया, उसी तरह यह भी आवश्यक है कि हम हिंदी के मानक उच्चारण का स्वरूप निर्धारित करें। अंग्रेजी में इस प्रकार का प्रयत्न हो चुका है। रिसीव्ड प्रोननसिएशन (Received Pronunciation) नामक मानक उच्चारण स्वीकृत है। शायद वह दिन दूर नहीं जब हम हिंदी के उच्चारण को मानक रूप दे दें और स्कूल-कॉलेजों में शिक्षार्थियों को भाषा के मानक उच्चरित रूप से परिचित करा दें।

अभ्यास

4) नीचे लिखे प्रश्नों का "हाँ" या "नहीं" में उत्तर दीजिए।

   1) भाषा का लिखित रूप उसका मूल या वास्तविक रूप है (हाँ/नहीं)

   2) भाषा के उच्चारण तत्वों को लिपि के माध्यम से पूर्ण रूप से समझा जा सकता है। (हाँ/नहीं)

   3) दो ध्वनियों के साथ में आने पर कुछ हद तक समरूप हो जाने को भाषा विज्ञान मे समीकरण कहते हैं। (हाँ/नहीं)

   4) समस्त हिन्दी-भाषी क्षेत्र में उच्चारण की एकरूपता है। (हाँ/नहीं)

5) नीचे लिखे शब्दों के मेल से बनने वाले शब्द लिखिए।

1) उत् + वेग	9) सत् + मान
2) उत् + घाटन	10) सत् + धर्म
3) उत् + कर्ष	11) सत् + आनंद
4) उत् + ज्वल	12) सत् + कार
5) उत् + शिष्ट	13) जगत् + नाथ
6) उत् + श्वास	14) जगत् + ईश
7) उत् + लास	15) भगवत् + गीता
8) सत् + गति	16) दिक् + गज

2.9 सारांश

इस इकाई में आपने हिंदी की ध्वनियों के विषय में पढ़ा। आपने जाना कि भाषा में ध्वनियों का महत्व बहुत अधिक है। हम जब बोलते हैं, तो उसमें विभिन्न प्रकार की ध्वनियों का ही प्रयोग करते हैं। इस प्रकार हमें शब्द-निर्माण में सबसे ज्यादा ज़रूरत ध्वनियों की ही पड़ती है। इस दृष्टि से प्रस्तुत इकाई में आपने ध्वनि के संबंध-सूत्रों में निम्नलिखित जानकारी हासिल की।

- हिंदी भाषा में कुल 47 वर्ण हैं और लगभग इतनी ही ध्वनियाँ हैं। इनसे तीन-चार लाख शब्द बने हैं।
- हिंदी प्रायः जैसे बोली जाती है वैसे ही लिखी जाती है। उच्चारण और लेखन की अनुरूपता के कारण हिंदी को वैज्ञानिक भाषा माना जाता है।
- यदि किसी भी शब्द में एक ध्वनि भी बदल दी जाए तो उसका अर्थ भी बदल जाता है।
- ध्वनियों का महत्व उनके उच्चारण के कारण है। कहने वाला जो बात कहता है, सुनने वाला वही बात सुनता है। ऐसा न होने पर भ्रम उत्पन्न हो जाता है और संप्रेषण नहीं होता। इससे हम उच्चारण के अंतर को पहचानने में समर्थ होते हैं।
- हिंदी भाषा का क्षेत्र बहुत विस्तृत है इसलिए अलग-अलग स्थानों पर कुछ ध्वनियों के उच्चारण में अन्तर आ जाता है।

आपने विभिन्न स्वरों तथा व्यंजनों के उच्चारण संबंधी नियमों का अध्ययन किया और ह्रस्व और दीर्घ स्वरों के उच्चारण के अंतर और घोष-अघोष, अल्पप्राण-महाप्राण, नासिक्य, कंठ्य, तालव्य आदि व्यंजनों के उच्चारण संबंधी विशिष्टताओं को पहचाना। आपने उच्चारण के आधार पर वर्तनी की कुछ विशेषताओं का भी अध्ययन किया। इसके अतिरिक्त आपने हिंदी में अन्य भाषाओं से आई ध्वनियों का परिचय भी प्राप्त किया। अनुतान या लहजा अर्थात् बोलने के ढंग की संक्षिप्त जानकारी के साथ ही आपने ध्वनि और लेखन के संबंधों तथा शब्द-रचना के नियमों की जानकारी भी प्राप्त की।

2.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

डॉ. भोलानाथ तिवारी (सं) : **हिंदी की ध्वनि-संरचना,** साहित्य सहकार, ई-10/4, कृष्णनगर, दिल्ली।

2.11 अभ्यासों के उत्तर

अभ्यास

1)

1) गलत 2) सही 3) सही 4) गलत
5) गलत

2)

1) ध्वनियाँ 2) अनुतान/लहजा 3) अर्थ/अंतर 4) अर्थभेदकता
5) ध्वनि/ध्वनियाँ

3)

1) क्/ख् 2) इ/ई 3) ए/ओ 4) म्/प्
5) च्/ख् 6) क्/ख् 7) ब्, च्/क्, छ, 8) आ/ओ
9) क्,अ/त्,आ 10) अ/आ 11) आ,अ/ओ,ई 12) र्,अ/ऋ
13) आ,अ/अ,आ 14) म्/व्

4)

1) नहीं 2) नहीं 3) हाँ 4) नहीं

5)

1) उद्वेग 2) उद्घाटन 3) उत्कर्ष 4) उज्ज्वल

5) उच्छिष्ट 6) उच्छ्वास 7) उल्लास 8) सद्गति

9) सन्मान 10) सद्धर्म 11) सदानंद 12) सत्कार

13) जगन्नाथ 14) जगदीश 15) भगवद्गीता 16) दिग्गज